No. of Printed Pages : 8

MBG–008

M. A. (BHAGAVADGITA STUDIES)

(MABGS)

Term-End Examination

June, 2026

MBG-008 : सम्पद्-श्रद्धा एवं मोक्षसंन्यास योग

Time : 3 Hours *Maximum Marks : 100*

Note : *(i) This question paper is in two Sections. Both the Sections are compulsory.*

(ii) Attempt questions from both Sections as per the instructions given.

(iii) Write the answers in either Hindi ***or*** *Sanskrit* ***or*** *English.*

Section—A

Note : *Answer any* ***four*** *of the following questions.* 4×15=60

1. Are the 'daivī sampadā' and 'asurī sampadā' mentioned in the Gītā the struggle amongst tendencies or amongst good and bad humans ? Explain in the context of morality.
2. Describe the ways for attaining cessation of Desire (kāma), Anger (krodha), Pride (mada) and Greed (lobha) on the basis of the Gītā.
3. What is 'sahajakarma' ? Analyse with support from the Gītā.
4. Describe Knower (jñātā), Knowledge (jñana) and Knowable (jñeya) on the basis of the Gītā.
5. What is the relationship between the Bhagavadgītā and 'ayurveda' ? Discuss.

6. Analyse the state of equanimity in Happiness (sukha)-Sadness (duhkha), Victory (jaya)-Defeat (parājaya) on the basis of the Gītā.

7. Describe the different types of 'tapa' on the basis of the Gītā.

Section—B

Note : *Answer any* ***four*** *of the following questions.* 4×10=40

1. Write a note on 'sat'-'asat' on the basis of the Gītā.

2. Write a note on 'śraddhātraya' based on the Gītā.

3. Discuss 'āsurī-sampadā' in brief.

4. Write a note on the Nature of Life as defined in the Gītā.

5. What is the contribution of 'dharma' in life ? Write a note with support from the Gītā.

6. What is the relation between 'śraddha' and 'guna' with renunciation (tyāga) as described in the Gītā.

7. Analyse the essence along with the meaning of the following verses :

   (a) श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात्।

   स्वभावनियतं कर्म कुर्वन्नाप्नोति किल्बिषम्॥

   (b) यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।

   तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मितर्मम॥

MBG–008

एम. ए. (भगवद्गीता अध्ययन)

(एम. ए. बी. जी. एस.)

सत्रांत परीक्षा

जून, 2026

एम.बी.जी.-008 : सम्पद्-श्रद्धा एवं मोक्षसंन्यास योग

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *(i) यह प्रश्न-पत्र दो खण्डों में विभक्त है। दोनों खण्ड अनिवार्य हैं।*

(ii) खण्डों में दिए गए निर्देशानुसार ही उत्तर दीजिए।

*(iii) हिन्दी **अथवा** संस्कृत **अथवा** अंग्रेजी में से किसी **एक** भाषा में उत्तर दीजिए।*

भाग—क

नोट : निम्नलिखित में से किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

$4 \times 15 = 60$

1. गीता में वर्णित दैवी और आसुरी सम्पदा प्रवृत्तियों का संघर्ष है, या अच्छे और बुरे मनुष्यों का ? नैतिकता के सन्दर्भ में इसकी व्याख्या कीजिए।

2. गीता के आधार पर काम, क्रोध, मद और लोभ से निवृत्ति के उपायों का वर्णन कीजिए।

3. सहजकर्म क्या है? गीता के समर्थन से विश्लेषण कीजिए।

4. भगवद्गीता के आधार पर ज्ञाता, ज्ञान और ज्ञेय का वर्णन कीजिए।

5. भगवद्गीता और आयुर्वेद में क्या सम्बन्ध है ? विवेचना कीजिए।

6. गीता के आधार पर सुख-दु:ख, जय-पराजय में समभाव का विश्लेषण कीजिए।

7. गीता के आधार पर तपों का वर्णन कीजिए।

खण्ड—ख

नोट : निम्नलिखित में से किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

$4 \times 10 = 40$

1. भगवद्गीता के आधार पर सत्-असत् पर टिप्पणी लिखिए।

2. भगवद्गीता आधारित श्रद्धात्रय पर टिप्पणी लिखिए।

3. आसुरी-सम्पदा की संक्षिप्त विवेचना कीजिए।

4. गीता में परिभाषित जीवन के स्वरूप पर टिप्पणी लिखिए।

5. जीवन में धर्म का क्या योगदान है ? गीता के समर्थन से टिप्पणी लिखिए।

6. गीता में वर्णित श्रद्धा और गुणों का त्याग से क्या सम्बन्ध है ? विवेचना कीजिए।

7. निम्नलिखित श्लोकों का अर्थ सहित भावविश्लेषण कीजिए :

(क) श्रेयान्स्वधर्मो विगुण: परधर्मात्स्वनुष्ठितात्।

स्वभावनियतं कर्म कुर्वन्नाप्नोति किल्बिषम्॥

(ख) यत्र योगेश्वर: कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धर:।

तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मितर्मम॥

× × × × ×